Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

वृद्धा आश्रम एवं महिला वृद्धजन : दशा एवं दिशा

डॉ0 सारिका दीक्षित
प्रोफेसर, डीन, रजिस्ट्रार, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय मेघालय।
श्री अरूणेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय मेघालय।

Article Info
Volume 8, Issue 1

Page Number : 01-09

Publication Issue :
January-February-2025

Article History
Accepted : 01 Jan 2025
Published : 10 Jan 2025

सारांश – वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवस्था होने के साथ ही विभिन्न समस्याओं को भी साथ लेकर आती है। इस अवस्था में व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर होने लगता है, तथा परिवार में अन्य सदस्यों के मध्य सामंजस्य न हो पाने के कारण तनाव की स्थिति निर्मित होती है साथ हि पाश्चात्य संस्कृति शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और बदलती जीवन शैली का प्रभाव हमारे जीवन पर इतना पड़ चुका है कि अपने परिवार में तथा समाज मे वृद्धो को सम्मान तथा समुचित स्थान नही प्रदान करवा रहे है। परिणाम स्वरूप वृद्धाश्रम जैसी संस्थाओ का जन्म हुआ, जहॉ रहते हुये महिला वृद्धजन अपने जीवन का शेष समय परिवार के सदस्यों के बिना व्यतीत करती है। वृद्धाश्रमों का उभरना परिवार संरचना में हो रहे बदलावों को दर्शाता है। महिला वृद्धजन अधिकतर विधवा परिवार द्वारा उपेक्षित या आर्थिक रूप से निर्भर होती है उनकी स्थिति पुरूषों की तुलना में अधिक नाजुक होती है। वृद्धाश्रम जो कभी अंतिम विकल्प माने जाते थे अब वृद्ध महिलाओं के लिए आश्रय स्थल बनते जा रहे है। इस शोध पत्र में वृद्धाश्रमों की स्थिति वहॉ उपलब्ध सुविधाएं वृद्ध महिलाओं का स्वास्थ्य तथा सामाजिक और मानसिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र वर्तमान में मध्यप्रदेश के महानगर एवं आर्थिक राजधानी इंदौर के संदर्भ में वृद्धाश्रम एवं महिला वृद्धजनः दशा एवं दिशा का समाज शास्त्रीय अध्ययन करना है।

मुख्य शब्दः– वृद्धाश्रम पाश्चात्य संस्कृति, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, परिवार, मानसिक स्थिति, महिला वृद्धजन।

प्रस्तावनाः– वृद्धावस्था एक ऐसा जीवनकाल है जिसमें व्यक्ति शारीरिक मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करता है। आधुनिक समाज में जहां जीवनशैली तेजी से बदल रही है और पारिवारिक ढांचे में भी महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे है वृद्ध महिलाओ की स्थिति अत्यंत चिंता जनक हो गई है ऐसे में वृद्धाश्रम उन

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महिलाओं के लिए एक आश्रय स्थल के रूप में उभर कर सामने आए है जो परिवार व समाज से अलग–थलग हो जाती है। भारत में पारंपरिक रूप से परिवार वृद्ध सदस्यों की देखभाल का दायित्व निभाता रहा है संयुक्त परिवार प्रणाली में बुजुर्गो को सम्मान और देखभाल मिलती थी हालांकि शहरीकरण, आधुनिकीकरण और न्यूक्लियर परिवार की अवधारणा के बढ़ने से महिला वृद्धजनों की स्थिति में व्यापक बदलाव आए है। युवा पीढ़ी अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन में व्यस्त हो गई है जिसके परिणाम स्वरूप वृद्ध महिलाओं की देखभाल में कमी आई है। यह स्थिति विशेष रूप से उन महिलाओ के लिए कठिन हो जाती है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नही है और जिनके पास स्वयं की देखभाल करने के लिए कोई भी नही होता। विश्व के अनेक भागों में एक ओर पोषण की सुधरती स्थिती, स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार तथा सभी क्षेत्रो में शिक्षा और

संचार माध्यमों की पहुॅच तथा अनेक सामाजिक कल्याणकारी कार्यक्रमों के कारण मृत्यु दर में कमी आयी है जिसका परिणाम जीवन प्रत्याशा में वृद्धि है। फलस्वरूप वृद्धजनों की संख्या में वृद्धि हुई है।

कई विकसित देश वृद्धावस्था की आयु 65 वर्ष मानते है, भारतीय दृष्टिकोण में वृद्धावस्था को सेवानिवृत्ति, 60 या अधिक उम्र को मानते है हमारे देश में वरिष्ठ नागरिकों की श्रेणियां विद्यमान है एक 60 वर्ष से अधिक, जिन्हे वृद्ध श्रेणी में तथा दूसरी 80 वर्ष से अधिक जिन्हे वयोवृद्ध की श्रेणी में शामिल किया जाता है। भारत में वर्ष 1901 में वृद्धजनों की कुल संख्या 1.2करोड़, 1951 में 5.7 करोड़ तथा 2001 में 7.6 करोड़ थी। वर्ष 2011 में भारत की कुल जनसंख्या 121 करोड़ थी जिसमें 10.4 करोड़ (104 मिलियन) जनसंख्या वृद्धजनों की थी। इस 104 मिलियन में 5.1 करोड़ जनसंख्या पुरूषो की तथा 5.2 करोड़ जनसंख्या महिलाओं की थी जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि महिला वृद्धजनों की संख्या पुरूष वृद्धजनों की संख्या से अधिक है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष से जुड़ी एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार 2020 में भारत विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या (142.86 करोड़) वाला देश है इस जनसंख्या में 60 वर्ष से ऊपर की जनसंख्या 14.8 करोड़ है जो कि कुल जनसंख्या का 10.5प्रतिशत है जो संभवतः 2050 तक 16प्रतिशत होने का अनुमान है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में जनसंख्या वृद्धि एवं महिला वृद्धजनो की बढ़ती समस्या एक गंभीर सामाजिक समस्या है वृद्ध महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियां बहुआयामी है जिसमें सबसे प्रमुख समस्या आर्थिक निर्भरता की है। विधवा होने या परिवार से अलग होने पर उनकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो जाती है, इसी कमी को पूरा करने भारत सरकार एवं मध्यप्रदेष सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा वृद्धजनो के कल्याण हेतु अनेक सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है जिनमे ''ओल्ड एज होम्स'' या वृद्धाश्रम प्रमुख है इनका संचालन सरकार द्वारा निजी लोगो द्वारा और गैर सरकारी संगठनों द्वारा किया जाता है।

इस शोघपत्र का उद्देश्य वृद्धा आश्रमों की वर्तमान स्थिति, वहां उपलब्ध सुविधाओं और वृद्ध महिलाओं की समस्याओं का विश्लेषण करना है। साथ हि नीतिगत सिफारिशें प्रस्तुत करना है जिससे इन आश्रमों की स्थिति में सुधार हो सके और वृद्ध महिलाओं को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिल सके। वृद्धा आश्रमों की दशा एवं दिशा पर केन्द्रित इस शोघपत्र में विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया गया है इसमें आश्रमों की भौतिक स्थिति, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाएं मानसिक स्वास्थ्य और सरकारी नीतियों का विश्लेषण शामिल है। शोध का प्रमुख उद्देश्य वृद्ध महिलाओं की जीवन स्थितियों को समझना और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के उपाय सुझाना है।

वृद्धावस्था का अर्थ एवं परिभाषा– वृद्धावस्था उम्र की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता में निरंतर कमी आने लगती है और व्यक्ति उम्रदराज हो जाता है। चीनी विद्वानों ने मानव जीवन को सात चरणों में विभाजित किया है। 6 वी शताब्दी ईसा पूर्व में पाइथागोरस ने मानव जीवन को विभिन्न ऋतुओं में समान विभाजित किया है, इन दोनों मामलों में वृद्धावस्था 60 वर्ष या उसके बाद से आता है। पारंपरिक हिन्दू संस्कृति के अनुसार मानव जीवन की आयु 100 वर्ष है इन 100 वर्षो को चार जीवन चरणों में विभाजित किया गया है! ब्रम्हचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और सन्यास/अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं अन्य दृष्टिकोणों में वृद्धावस्था की भिन्न–भिन्न रूपो में परिभाषित किया गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठनः– डब्ल्यू.एच.ओं के अनुसार वृद्धावस्था 60 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होती है इस आयु वर्ग मे शारीरिक और मानसिक क्षमताओं मे कमी आने लगती है।

भारतीय परिपेक्ष्य मेंः– भारत में वृद्धावस्था आमतौर पर 60 वर्ष (महिला वृद्धावस्था 58 वर्ष) या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों को संदर्भित करती है सरकारी और गैर सरकारी योजनाओं में इस आयु को विभिन्न लाभों के लिए मान्यता दी गई है।

समाजिक दृष्टिकोंणः– वृद्धावस्था वह अवस्था है जब व्यक्ति कामकाजी जीवन से निवृत्त होकर समाज में एक परिपक्व और अनुभवी व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है।

जैविक दृष्टिकोणः– वृद्धावस्था वह अवस्था है जब शरीर की कोशिकाएं और ऊतक कमजोर हो जाते है और अंगों की कार्यक्षमता में कमी आने लगती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणः– मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण में वृद्धावस्था वह अवस्था है जब व्यक्ति जीवन के अनुभवों का संग करता है और मानसिक शांति और संतोष की खोज में रहता है।

साहित्य की समीक्षा

(श्रीनिवास, एम.एन. 1066) डॉ श्रीनिवास ने ''संयुक्त परिवार प्रणाली'' पर अपने अध्ययन में वृद्ध महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान की पारंपरिक व्यवस्था को रेखांकित किया। उनके अनुसार, औद्योगिकीकरण और नगरीकरण ने परिवार संरचना को बदल दिया, जिससे वृद्ध महिलाओं की सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा में कमी आई। उन्होने बताया कि आधुनिकता के प्रभाव ने पारिवारिक रिश्तों में दरार पैदा की, जिसके कारण वृद्ध महिलाएं आर्थिक और भावनात्मक रूप से असुरक्षित हो गई। उन्होने पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाकर वृद्ध महिलाओं की स्थिति सुधारने का सुझाव दिया।

(देसाई, यू.आर. 2000) यू.आर. देसाई ने ''समकालीन परिवार संरचना और वृद्धजन'' पर अपने शोध में पारिवारिक विघटन के कारण वृद्ध महिलाओं के जीवन में आए बदलावों को रेखांकित किया। उन्होने बताया कि आर्थिक निर्भरता और परिवार के समर्थन की कमी वृद्ध महिलाओं के लिए मानसिक तनाव और सामाजिक अलगाव का मुख्य कारण है। उनके अनुसार, शहरीकरण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ते चलन ने वृद्ध महिलाओं को वृद्धाश्रमों में आश्रय लेने पर मजबूर कर दिया। उन्होने वृद्ध महिलाओं की सहायता के लिए सामुदायिक प्रयास और सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता पर जोर दिया।

(माधव.जी.आर.2012) जी.आर. माधव ने वृद्धाश्रम में रहने वाली महिलाओं के मानसिक और सामाजिक अनुभवों पर शोध किया। उनके अध्ययन में पाया गया कि वृद्ध महिलाएं पारिवारिक उपेक्षा, सामाजिक परित्याग और अकेलेपन के कारण वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर होती है। माधव ने वृद्धाश्रमों को केवल निवास स्थान नही, बल्कि सामाजिक सहभागिकता और मानसिकता पुनर्वास का स्थान बनाने पर जोर दिया। उन्होने यह सुझाव

दिया कि वृद्धाश्रमों में सांस्कृतिक और सामुदायिक गतिविधियों का समावेष वृद्ध महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है।

(सिंह, सुषमा 2015) डॉ सुषमा सिंह ने '' लैंगिक असमानता और वृद्ध महिलाएं'' विषय पर शोध किया। उन्होने वृद्ध महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं जैसे विधवा जीवन, स्वास्थ्य समस्याओं, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक भेदभाव पर ध्यान केन्द्रित किया। उनके अध्ययन में दिखाया कि विधवा वृद्ध महिलाओं को सामाजिक अपमान और मानसिक तनाव का अधिक सामना करना पड़ता है उन्होने सुझाव दिया कि सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को वृद्ध महिलाओं के लिए विशेष स्वास्थ्य योजनाएं, आर्थिक सहायता और सामाजिक समर्थन प्रदान करने की दिशा में काम करना चाहिए।

(कुमार, अजय 2020) अजय कुमार ने ''शहरी वृद्धाश्रमों में जीवनः एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण'' मे वृद्ध महिलाओं की समस्याओ और वृद्धाश्रमों की भूमिका का अध्ययन किया। उन्होने पाया कि शहरीकरण और व्यस्त जीवन शैली के कारण वृद्ध महिलाएं पारिवारिक संबंधों से कटने लगी है, जिससे वृद्धाश्रम उनके लिए विकल्प बन गए है। उन्होने सुझाव दिया कि वृद्धाश्रमों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने और सामाजिक पुनर्वास केन्द्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि वृद्ध महिलाएं गरिमा के साथ जीवन व्यतीत कर सके।

अध्ययन का उद्देश्य प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

01– वृद्ध महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति का अध्ययन करना।

02– वृद्धाश्रम में वृद्ध महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

03– वृद्ध महिलाओं को उनके लिए संचालित योजनाओं की जानकारी का अध्ययन।

04– वृद्ध महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कानून की जानकारी का अध्ययन करना

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के महानगर एवं आर्थिक राजधानी इंदौर के संदर्भ मे।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध संरचना के अंतर्गत किया गया है।

अध्ययन प्रविधि एवं तकनीक– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न प्रविधि एवं तकनीकों का प्रयोग किया गया है।

01– निदर्षन

02– साक्षात्कार अनसूची

03– असहभागी अवलोकन

04– प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग

अनुसंधान क्रियाविधि– इस शोध अध्ययन में इंदौर नगर के वृद्धाश्रमों में निवासरत 300 वृद्ध महिलाओं को शामिल किया गया है जिनकी उम्र 58 वर्ष या उससे अधिक है। इस अध्ययन में उन समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है जो एक महिला अपने वृद्धावस्था के दौरान सामना करती है। इस दौरान सभी वृद्ध महिलाओं को पूर्णरूप से आश्वासित किया गया है कि यह समस्त जानकारी व्यक्तिगत और गोपनीय रखी जाएगी। प्राप्त हुये आकड़ों को गणना और मूल्यांकन करने के लिए संख्यिकीय उपकरण का प्रयोग किया गया है। शोध के परिणामों का विवरण संख्या और प्रतिशत दोनो में किया गया है।

डेटा विश्लेषण

तालिकाः–1

वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिला वृद्धजनों का धर्म

क्र0	धर्म/पंथ	संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दू	165	55
2	मुसलमान/इस्लाम	78	26
3	इसाई	34	11.33
4	सिक्ख	17	5.66
5	जानकारी नही	6	2
	कुल	300	100

उपरोक्त तालिका में उत्तरदाताओ का धर्म/पंथ के संदर्भ में तथ्य दर्शाये गये है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 55 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं हिन्दू धर्म/पंथ से है एवं 26प्रतिशत, 11.33प्रतिशत एवं 5.66प्रतिशत महिलाएं क्रमशः मुसलमान/इस्लाम, इसाई एवं सिक्ख धर्म/पंथ से संबंधित है। जबकि पारसी, जैन एवं बौद्ध धर्म/पंथ से संबंधित वृद्ध महिलाओं की संख्या शून्य (0) है।

तालिकाः–02

वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिला वृद्धजन की पृष्ठभूमि

क्र0	पृष्ठभूमि	संख्या	प्रतिशत
1	ग्रामीण	20	6.66
2	शहरी	280	93.33
	कुल	300	100

तालिका क्र0–2 वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिला वृद्धजन की पृष्ठभूमि संबंधी आंकड़ों को प्रस्तुत करती है जिसमें शहरी पृष्ठभूमि की वृद्ध महिलाओं का प्रतिशत 93.33 तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि की वृद्ध महिलाओं का प्रतिशत 6.66 है।

तालिका–3

वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिला वृद्धजनों की जातीय स्थिति–

क्र0	जाति	संख्या	प्रतिशत
1	अनुसूचित जाति	60	20
2	अनुसूचित जनजाति	15	5
3	अन्य पिछड़ा वर्ग	120	40
4	सामान्य	105	35
	कुल	300	100

तालिका क्र0–3 वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिला वृद्धजनों की जातीय स्थिति संबंधी आंकड़ों को प्रस्तुत करती है जिसमें अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत 40 है जबकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत क्रमशः–20, 8 तथा 35 है।

तालिकाः–4

वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों की वैवाहिक स्थिति

क्र0	वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	विवाहित	46	15.33
2	अविवाहित	8	2.66
3	विधवा	150	50
4	परित्यक्ता	36	12
5	तलाकशुदा	60	20
	कुल	300	100

तालिका क्र0–4 वृद्धाश्रम मं निवासरत महिला वृद्धजनों की वैवाहित स्थिति संबंधी आकड़े प्राप्त होते है जिसमें सर्वाधिक 50 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं विधवा तथा सबसे कम 2 प्रतिशत अविवाहित वृद्ध महिलाएं है साथ ही विवाहित, परित्यक्ता एवं तलाकषुदा वृद्ध महिलाओं का प्रतिशत क्रमशः– 15, 33, 12, 20 है।

तालिकाः–5

वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों की आर्थिक स्थिति

क्र0	आर्थिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	आत्मनिर्भर	36	12
2	परनिर्भर	264	88
	कुल	300	100

तालिका क्र0–5 वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों की आर्थिक स्थिति संबंधी तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिसमें सर्वाधिक 88 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं परनिर्भर जबकि 12 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं आत्मनिर्भर है।

तालिका–6

वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों के परिवार से संबंध

क्र0	परिवार से संबंध	संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अच्छे	51	17
2	अच्छे	60	20
3	खराब	24	8
4	कोई मतलब नही	45	15
5	सामान्य	120	40
	कुल	300	100

तालिका क्र0–6 वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों के परिवार से संबंधों को प्रदर्षित करती है जिसमें सर्वाधिक 40 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं का अपने परिवार से सामान्य जबकि 8 प्रतिशत का परिवार से खराब संबंध है वही बहुत अच्छे, अच्छे एवं कोई मतलब नही का प्रतिशत क्रमषः– 17, 20 एवं 15 है।

तालिकाः–7

वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों का आश्रम आने का कारण

क्र0	आश्रम आने का कारण	संख्या	प्रतिशत
1	घर नही है	15	5
2	लावारिस मिली	21	7
3	बच्चे रखना नही चाहते	90	30
4	बच्चे विदेश में सेटल है	45	15
5	गम्भीर बिमारी	33	11
6	बच्चों की आर्थिक स्थिति कमजोर	66	22
7	अन्य	30	10
	कुल	300	100

तालिका क्र0–7 वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों का आश्रम आने का कारण संबंधी आकड़े है जिसमें सर्वाधिक 22 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं बच्चों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण तो वही 5 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं के पास स्वयं का कोई घर नही है।

तालिक–8

वृद्धाश्रम में निवास करने की समयावधि

क्र0	समयावधि	संख्या	प्रतिशत
1	6 माह से कम	60	20
2	6 माह से 1 वर्ष	96	32
3	1 वर्ष से 3 वर्ष	54	18
4	3 वर्ष से अधिक	90	30
	कुल	300	100

तालिका क्र0–8 वृद्धाश्रम में निवास करने वाली महिलाओं की समयावधि को बताता है ऐसी महिलाएं जो 6 माह से कम समय से वृद्धाश्रम में रह रही उनकी संख्या 60 है जबकि 3 वर्ष से अधिक समय से आश्रम में रह रही है महिलाओं की संख्या 90 है।

तालिका–9

वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों को आश्रम में कैसा लगता है

क्र0	भावनाएं	संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अच्छा	21	7
2	अच्छा	54	18
3	सामान्य	60	20
4	खराब	54	18
5	बहुत खराब	42	14
6	अकेलापन	24	8
7	परिवार जैसा	30	10

8	सुकून भरी जिन्दगी	15	5
	कुल	300	100

तालिका क्र0–09 वृद्धाश्रम में निवासरत महिला वृद्धजनों को आश्रम में रहते हुये उनकी भावनाओं को प्रदर्शित करता है जिसमें क्रमशः–18, 20, 18 प्रतिशत महिलाओं की भावनाएं क्रमशः– अच्छा, सामान्य व खराब है तो वही 10 प्रतिशत महिलाओं को आश्रम में परिवार जैसा लगता है।

तालिका–10

वृद्धाश्रम में प्राप्त सुविधाओं संबंधी संतुष्टि की स्थिति

क्र0	संतुष्टि की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	संतुष्ट	135	45
2	असंतुष्ट	60	20
3	संतुष्ट किन्तु सुधार की आवश्यकता	105	35
	कुल	300	100

तालिका क्र0–10 वृद्धाश्रम में प्राप्त सुविधाओं संबंधी संतुष्टि की स्थिति संबंधी आकड़े है जिसमें 45 प्रतिशत महिलाएं सुविधाओं से संतुष्ट वही 20 प्रतिशत असंतुष्ट है जबकि 35 प्रतिशत महिलाओं ने संतुष्ट किन्तु सुधार की आवश्यकता पर सहमति दी।

तालिका–11

सरकार द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी की स्थिति

क्र0	योजनाओं की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1	जानकारी है	120	40
2	जानकारी नही है	60	20
3	कुछ की जानकारी	120	40
	कुल	300	100

तालिका क्र0–11 सरकार द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी संबंधी तथ्यों को प्रदर्शित करती है जिसमें क्रमशः–40, 20, 40 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं को योजनाओं की जानकारी है, नही है तथा कुछ जानकारी है।

तालिका–12

वृद्धाश्रम की महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनों की जानकारी

क्र0	कानून अधिकार	संख्या	प्रतिशत
1	जानकारी है	60	20
2	जानकारी नही है	120	40
3	कुछ जानकारी है	120	40
	कुल	300	100

तालिका क्र0–12 वृद्धाश्रम की महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनों की जानकारी संबंधी आकड़े है जिसमें 20 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं को जानकारी है जबकि 40 प्रतिशत को जानकारी नही है वही 40 प्रतिशत वृद्ध महिला को अपने अधिकारों एवं कानूनों की कुछ जानकारी है।

निष्कर्षः–वृद्ध महिलाओं की स्थिति और वृद्धाश्रमों की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन वर्तमान समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारत में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार प्रणाली वृद्धजनों को सुरक्षा और देखभाल प्रदान करती थी। लेकिन शहरीकरण, आद्यौगिकीकरण और पारिवारिक संरचना में बदलाव ने वृद्ध महिलाओं की स्थिति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। विशेष रूप से महिला वृद्धजनों को समाज में लैगिक असमानता, आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य समस्याओं और सामाजिक बहिष्कार जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वृद्ध महिलाओं की दशा पर शोध यह दर्शाता है कि उनके जीवन में सबसे बड़ी समस्या आर्थिक निर्भरता है। समाज में उनके लिए रोजगार के सीमित अवसर, पेंशन या अन्य वित्तीय संसाधनों की कमी और विधवा होने पर उनके अधिकारों की अनदेखी उनके जीवन को और कठिन बना देती है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य समस्याएं और मानसिक तनाव उनके जीवन की गुणवत्ता को और प्रभावित करते है। वृद्धाश्रम जो वर्तमान में वृद्ध महिलाओं के लिए आश्रय स्थल के रूप में उभरे है, उनकी जरूरतो को पूरा करने में कई मामलों में असमर्थ है। बुनियादी सुविधाओं की कमी सामाजिक अलगाव और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव वृद्ध महिलाओं की समस्याओं को और बढ़ाता है निष्कर्ष महिला वृद्धजनों की समस्याओं का समाधान हेतु व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है जिसमें परिवार का योगदान, सामुदायिक भागीदारी, सरकारी नीतियों का क्रियान्वन एवं वृद्धाश्रमों का पुनर्गठन आदि शामिल है।

संदर्भ सूची

1. एम.एन. श्रीनिवास(1966) ''सोशल चेन्ज इन मॉर्डन इंडिया'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रकाशन, प्रथम संस्करण
2. यू.आर. देसाई(2000) ''इण्डियन फैमिली इन ट्रांजिशनः अ सोषियोलॉजिकल स्टडी'' द्वितीय संस्करण पॉपुलर प्रकाशन
3. जी.आर. माधव(2012) ''एल्डर्ली वूमेन एण्ड ओल्ड ऐज होम्स इन अर्बन इण्डिया'' प्रथम संस्करण, सेज प्रकाशन
4. वी.एस. रेड्डी(2008) ''एल्डर्ली केयर इन इण्डियाः अ सोशियोलॉजिकल स्टडी, ओरिएट ब्लैकस्वान पब्लिकेशन
5. के.आर. लक्ष्मी (2015) ''विडोहुड एण्ड सोशल एक्सक्लूशन इन इण्डिया'' कंसर्न पब्लिकेशन
6. वंदना रानी (1998) ''वृद्धजन समस्याएं एवं प्रत्याशाएं'' प्रकाशित शोध प्रबंध एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्व विद्यालय, बरेली
7. अरूणिमा शर्मा (2016) वूमेन एण्ड एजिंगः अ सोशियोलॉजिकल प्रॉस्पेक्टिव, अटलांटिक पब्लिशिंग
8. आर.एन. मिश्रा (2005) एजिंग एण्ड सोसायटीः इण्डियन प्रॉस्पेक्टिव, डिस्कवरी पब्लिकेशन
9. https://www.un.org
10. https://Jansampark.mp.gov.in
11. https://socialJustice.gov.in
12. https://censusindia.gov.in